ایاتها ٨ ﴿١٠٢ سُورَةُ التَّكَاثُرِ مَكِّيَّةٌ ١٦﴾ رکوعها ١

सूरए तकासुर मक्किय्या है, इस में आठ आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

اَلۡهٰكُمُ التَّكَاثُرُ ۙ﴿۱﴾ حَتّٰى زُرۡتُمُ الۡمَقَابِرَ ؕ﴿۲﴾ كَلَّا سَوۡفَ تَعۡلَمُوۡنَ ۙ﴿۳﴾ ثُمَّ

तुम्हें ग़ाफ़िल रखा[2] माल की ज़ियादा त़लबी ने[3] यहां तक कि तुम ने क़ब्रों का मुंह देखा[4] हां हां जल्द जान जाओगे[5] फिर

كَلَّا سَوۡفَ تَعۡلَمُوۡنَ ؕ﴿۴﴾ كَلَّا لَوۡ تَعۡلَمُوۡنَ عِلۡمَ الۡيَقِيۡنِ ؕ﴿۵﴾ لَتَرَوُنَّ الۡجَحِيۡمَ ۙ﴿۶﴾

हां हां जल्द जान जाओगे[6] हां हां अगर यक़ीन का जानना जानते तो माल की मह़ब्बत न रखते[7] बेशक ज़रूर जहन्नम को देखोगे[8]

ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيۡنَ الۡيَقِيۡنِ ۙ﴿۷﴾ ثُمَّ لَتُسۡـَٔلُنَّ يَوۡمَئِذٍ عَنِ النَّعِيۡمِ ﴿۸﴾ ع

फिर बेशक ज़रूर उसे यक़ीनी देखना देखोगे फिर बेशक ज़रूर उस दिन तुम से ने'मतों से पुरसिश होगी[9]

ایاتها ٣ ﴿١٠٣ سُورَةُ الۡعَصۡرِ مَكِّيَّةٌ ١٣﴾ رکوعها ١

सूरए अ़स्र मक्किय्या है, इस में तीन आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

وَالۡعَصۡرِ ۙ﴿۱﴾ اِنَّ الۡاِنۡسَانَ لَفِىۡ خُسۡرٍ ۙ﴿۲﴾ اِلَّا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا

उस ज़मानए मह़बूब की क़सम[2] बेशक आदमी ज़रूर नुक़्सान में है[3] मगर जो ईमान लाए और अच्छे काम

1 : "सूरए तकासुर" मक्किय्या है। इस में एक रुकूअ़, आठ आयतें, अठ्ठाईस कलिमे, एक सो बीस ह़र्फ़ हैं। 2 : **अल्लाह** तआ़ला की त़ाअ़त से 3 : इस से मा'लूम हुवा कि कस्रते माल की ह़िर्स और इस पर मुफ़ाख़रत मज़्मूम है और इस में मुब्तला हो कर आदमी सआ़दते उख़रविय्या से मह़रूम रह जाता है। 4 : या'नी मौत के वक़्त तक ह़िर्स तुम्हारे दामन गीरे ख़ात़िर रही। ह़दीस शरीफ़ में है : सय्यिदे आ़लम ﷺ ने फ़रमाया : "मुर्दे के साथ तीन होते हैं दो लौट आते हैं एक उस के साथ रह जाता है। एक माल एक उस के अहलो अक़ारिब एक उस का अ़मल, अ़मल साथ रह जाता है बाक़ी दोनों वापस हो जाते हैं। (بخاری) 5 : नज़्अ़ के वक़्त अपने इस ह़ाल के नतीजए बद को 6 : क़ब्रों में। 7 : और ह़िर्से माल में मुब्तला हो कर आख़िरत से ग़ाफ़िल न होते। 8 : मरने के बा'द 9 : जो **अल्लाह** तआ़ला ने तुम्हें अ़त़ा फ़रमाई थीं, सिह़्ह़तो फ़राग़ व अम्नो ऐश व माल वग़ैरा जिन से दुन्या में लज़्ज़तें उठाते थे। पूछा जाएगा : येह चीज़ें किस काम में ख़र्च कीं, इन का क्या शुक्र अदा किया ? और तर्के शुक्र पर अ़ज़ाब किया जाएगा। 1 : "सूरए वल अ़स्र" जुम्हूर के नज़्दीक मक्किय्या है। इस में एक रुकूअ़, तीन आयतें, चौदह कलिमे, अड़सठ ह़र्फ़ हैं। 2 : "अ़स्र" ज़माने को कहते हैं और ज़माना चूंकि अ़जाइबात पर मुश्तमिल है, इस में अह़वाल का तग़य्युरो तबद्दुल नाज़िर के लिये इ़ब्रत का सबब होता है और येह चीज़ें ख़ालिक़े ह़कीम की क़ुदरतो ह़िक्मत और उस की वह़्दानिय्यत पर दलालत करती हैं। इस लिये हो सकता है कि ज़माने की क़सम मुराद हो और "अ़स्र" उस वक़्त को भी कहते हैं जो ग़ुरूब से क़ब्ल होता है। हो सकता है कि ख़ासिर के ह़क़ में इस वक़्त की क़सम याद फ़रमाई जाए जैसा कि राबेह़ के ह़क़ में "दुह़ा" या'नी "वक़्ते चाश्त की क़सम" ज़िक्र फ़रमाई गई और एक क़ौल येह भी है कि अ़स्र से नमाज़े अ़स्र मुराद हो सकती है जो दिन की इबादतों

www.dawateislami.net